अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा साहित्य में सामाजिक सरोकार

देश भगत विश्वविद्यालय, मंडी गोबिन्दगढ़ की पीएच. डी. (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की प्रस्तावित रूपरेखा

शोध निर्देशक

डॉ. अजय पाल सिंह

अध्यक्ष हिन्दी विभाग

देश भगत विश्व विश्वविद्यालय,

मंडी गोबिन्दगढ़

शोधार्थी का नाम

सीमा कुमारी

अनुक्रमांक 21380194003

भाषा विभाग ,

देश भगत विश्वविद्यालय, मंडी गोबिन्दगढ़

शोध विषय का शीर्षक : अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा साहित्य में सामाजिक सरोकार

1) भूमिका

साहित्य समाज का दर्पण है , साहित्य में ही समाज के जीवन का यथार्थ चित्रण पाया जाता है । समाज मानव के विभिन्न कार्यों का आधारभूत ढ़ाचा है । मनुष्य समाज में रहकर ही अपनी अर्न्तक्रियाओं को पूर्ण करता है । मनुष्य के बिना समाज का निर्माण नहीं हो सकता और समाज के बिना मनुष्य अधूरा है । अर्थात् मनुष्य , समाज और साहित्य एक – दूसरे के पूरक है ।

सामाजिक शब्द का अर्थ है '' अपने समूह के प्रति जागरूकता । '' अर्थात् जो व्यक्ति अपने समाज के प्रति चेतन रहते हैं उन्हें सामाजिक व्यक्ति की संज्ञा दी जा सकती है । 'सरोकार' शब्द सामान्य अर्थ है परस्पर व्यवहार का संबंध , लगाव , प्रयोजन । किसी भी मनुष्य के लिए चिन्ताजनक विषय अर्थात् जो विचारणीय है , जिसमें वह स्वयं शामिल है , वही उसके सरोकार होते हैं । दूसरे शब्दों में सामाजिक सरोकार सामाजिक मुद्दों को साहित्य में रेखांकित करने की कला है ।

मनुष्य के सामाजिक जीवन का आधार समाज है । समाज में परिवार , राजनीति , अर्थव्यवस्था , धर्म , नैतिकता तथा संस्कृति से सम्बंधित संस्थाओं एवं प्रणालियों का उद्भव और विकास होता है। व्यक्ति के जीवन से जुड़े इन विविध , पक्षों , संस्थाओं एवं

प्रणालियों के समूह को ही सामाजिक सरोकार की संज्ञा दी जाती है । समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं को समाधान के साथ प्रस्तुत करना भी सामाजिक सरोकार है ।

साहित्य और समाज का गरा सम्बंध है । जब – जब साहित्य सामाजिक सन्दर्भों से जुड़ता है, समाज के सरोकारों का सच्चा विश्लेषण करता है , तब – तब उसकी विश्वसनीयता कायम रहती है । सामाजिक सरोकार में जीवन की जटिलताओं , आशाओं , भाव – भंगीकाओं , मनुष्य के विविधरंगी जीवन को लेखक अपने अनुभव से चित्रित करता है । अब्दुल बिस्मिल्लाह एक ऐसे ही लेखक है जो सामाजिक सरोकार की रचनात्मक कलम को पकड़कर चलते हैं ।

अनुभूतिप्रवण सामाजिक प्राणी होने के नाते सामाजिक गतिविधियाँ साहित्यकार की भी चिन्ता का विषय बन जाती है । हिन्दी कथाकार अब्दुल बिस्मिल्लाह की चिन्ता है , समाज , धर्म , जाति , वर्ग और संस्कृति । अब्दुल बिस्मिल्लाह अपने साहित्य में भारतीय समाज के बदलते यथार्थ का चित्रण करते हुए जीवन के संघर्ष के कठिन और प्रेरणादायी प्रंसगों को उद्धत करते हैं । लेखक की दृष्टि समाज के सभी कोनों , अंतरों में बराबर जाती है। यही कारण है कि लेखक ने अपने कथा – साहित्य में सामाजिक सरोकारों को गहराई से रेखांकित कर जीवत अभिव्यक्ति प्रदान की है । लेखक जनचेतना के संहृदय के समान कथा – साहित्य को

प्रासंगिकता से परिपूर्ण करने वाले और कथा – साहित्य के माध्यम से हिन्दी साहित्य की वर्तमान दशा एवं दिशा दोनों से प्रभावित भी हैं , और दोनों को प्रभावित करने वाले भी हैं । इसे उनकी कृतियों की परम्परा और प्रगतिशीलता के समन्वय के रूप में देखा जा सकता है । अब्दुल बिस्मिल्लाह का रचना संसार पर्याप्त विस्तृत है। इन्होंने अब तक साथ कहानी संग्रह , चार काव्य संग्रह ,चार नाटक , सात उपन्यास लिखे । इनकी कालजयी कृत्तियां इनकी जीवन यात्रा का प्रतिफलन हैं । इन्होंने अपने साहित्य में जीवन के विघटनकारी यथार्थ को गहराई से रेखांकित कर जीवंत अभिव्यक्ति प्रदान की है ।

1.1 विषय चयन का कारण

एम. फिल में '' विकेकी राय कृत मंगलभवन और अमंगलहारी उपन्यासों में सामाजिक समस्याएं'' पर लघु शोध प्रबन्ध लेखन के दौरान भारतीय समाज में व्याप्त समस्यों के प्रति चिन्नित कई लेखकों को पढ़ने का अवसर मिला । अब्दुल बिस्मिल्लाह उन्हीं में से एक हैं । समाज के प्रति उनकी जागरूकता का अनुमान उनकी कृति ' झीनी – झीनी बीनी चदरिया' से ही लगाया जा सकता है । तीस वर्ष पूर्व लिखा गया उपन्यास हिन्दी साहित्य में मील का पत्थर है , जिसे पढ़कर लगता है कि यह उपन्यास आज ही लिखा गया है । उपन्यास की प्रासंगिकता आज 30 वर्ष बाद भी उतनी ही है और अगर सत्ता प्राप्ति के लिए सही व्यक्ति / गधों का चुनाव

न होता रहा तो अगले 300 वर्षों बाद भी इसकी प्रासंगिकता ऐसी ही रहेगी ।

अब्दुल बिस्मिल्लाह का साहित्य पढ़ने के उपरान्त यह तथ्य उभर कर सामने आया कि अब्दुल बिस्मिल्लाह ने प्राचीन और आधुनिक पीढ़ी से जुड़े संकटों का निपटारा , ग्रामीण जीवन व मुस्लिम समाज के संघर्ष , संवेदनाएं , यातनाएं और अन्तर्द्वंद को केन्द्र बिन्दु बनाया है । उन्होंने अपने कथा साहित्य में वर्तमान समाज के ज्वलंत प्रश्नों , पूंजीवादी व्यवस्था और दलाल बुर्जुआ के बीच दम तोड़ती व्यक्तियों की व्यथा को चित्रित किया हैं । पिछड़े हुए गरीब लोगों में उन्होंने विकासात्मक दृष्टि और मार्क्सवादी विचार देकर प्रेरित करने का काम किया है । इन विचारों ने मुझे अधिक प्रभावित किया । अब्दुल बिस्मिल्लाह का व्यक्तित्व युवकों के लिए प्ररेणादायी और प्रोत्साहित करनेवाला है । उन्होंने बचपन से युवावस्था और प्रौढावस्था तक अनेक कठिनाइयों , परेशानियों और संघर्षों को बड़े उत्साह के साथ झेला , भोगा है । उनके 'समर शेष है' और ' ज़हरबाद' उपन्यासों के नायक वे स्वंय रहे हैं। उन्होने अपने जीवन में आनेवाली समस्याओं का डटकर सामना किया है । जिसके कारण उनके व्यक्तित्व का प्रभाव और प्ररेणा नवयुवकों के मानसपटल पर बहुत गहरा पड़ा है ।

अतः मैंने अपने शोध निदेशक डॉ. अजयपाल सिंह जी से विचार विमर्श किया और उनकी अनुमति से '' अब्दुल बिस्मिल्लाह

के कथा साहित्य में सामाजिक सरोकार'' विषय पर अनुसंधन करना तय किया ।

1.2 विषय का महत्व

समकालीन जीवन की वास्तविकता किसी से छिपी नहीं है । आधुनिक शिक्षा और उभरते हुए व्यक्तित्व समाज के लिए घुन की तरह हैं जो धीरे – धीरे उसकी जड़ें खोखली कर रहे हैं । अब्दुल बिस्मिल्लाह ने अपने कथा साहित्य में मानवीय सम्बंधो को यर्थाथ रूप में सामने लाने का प्रयास किया है वह एक प्रगतिशील , धर्मनिरप्रेक्ष और मार्क्सवादी विचारधारा के लेखक है । उन्होंने अपने साहित्य में मुस्लिम समाज की रूढ़ियों और परम्पराओं को लेकर विविध समस्याओं को उजागर किया हैं । उन्होनें अपने कथा साहित्य में हिन्दु – मुस्लिम समाज के साथ ही अन्य जाति , धर्म , निम्नवर्ग तथा उच्चवर्ग , पूंजीपति , राजनेताओं की शोषक प्रवृति पर धार – धार लेखनी चलाई है । अब्दुल बिस्मिल्लाह ने सदैव अनुभूत स्थितियों को ही कथा का विषय बनाया है और उसे पूरी निष्पक्षता से प्रस्तुत किया है । हर अच्छी रचना और आलोचना अन्तः नैतिक होती है वस्तुत : नैतिक मूल्य ही उसकी नीव में आधार हैं। अब्दुल बिस्मिल्लाह का साहित्य इसका अपवाद नहीं । उन्होंने परिवेश से जुड़ी विविध समस्याओं को अपने साहित्य द्वारा न्याय दिलाने का प्रयास किया है । अब्दुल बिस्मिल्लाह ने वैज्ञानिक और शोध परक दृष्टि को अपनाते हुए सामाजिक सरोकारों को

तलाशने का प्रयास किया है । इस दृष्टि से प्रस्तावित शोध – विषय महत्त्वपूर्ण है ।

2) अध्ययन क्षेत्र

साहित्य में जब सामाजिक सरोकार की बात की जाती है तो उसका सीधा अर्थ समकालीन परिवेश एवं समसामायिक जीवन की गति के भीतर उभरते एवं स्वरूप ग्रहण करते प्रगतिशील तत्वों से ही होता है । प्रस्तुत शोध कार्य का अध्ययन क्षेत्र अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा साहित्य में सामाजिक सरोकार के अर्न्तगत सामाजिक , आर्थिक , राजनैतिक , धार्मिक एवं सांस्कृति पहलुओं का समाजशास्त्रीय दृष्टि से अध्ययन करना है ।

3) औचित्य

आज देश में चुनौतियाँ बढ़ती जा रही हैं तो इस समय सामाजिक सरोकार और भी महत्त्वपूर्ण होते जा रहे हैं। प्रतियोगिता और संघर्ष के नित नए – नए मोर्चे खुल रहे हैं जिनसे जूझना खतरों और जोखिक भरा काम है । इस तरह की परिस्थितियाँ आर्थिक , सामाजिक , राजनैतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जिम्मेदाारियों का भार बढ़ा देती हैं ।

4) उदेद्श्य

इस शोध कार्य में निम्न उदेद्श्य हैं :–

1 साहित्य के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक सरोकार के अर्थ एवं स्वरूप को समझना ।

2 अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा साहित्य में चिन्हित सामाजिक सरोकार के कारक तत्वों को खोजना ।

3 समकालिन समाज में सामाजिक सरोकार की महत्त्वता को रेखांकित करना ।

4 समकालिन समाज को सामाजिक सरोकार के प्रति जागरूक करना।

5) प्राक्कल्पना :

साहित्य अपने समय की कलात्मक अभिव्यक्ति ही नहीं करता बल्कि अपने समय की सामाजिक , धार्मिक , सांस्कृतिक और उच्च मानवीय मूल्यों की नैतिक अभिव्यक्ति भी करता है । साहित्य के सामाजिक सरोकार विषय के अन्तर्गत साहित्य और समाज दो क्षेत्र हैं और सरोकार एक ऐसा कारक है जो इन दोनों क्षेत्रों को आपस में जोड़ता है । अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा – साहित्य में ग्रामीण जीवन व मुस्लिम समाज के संघर्ष , संवेदनाएं , यातनाएं और अन्तर्द्वंद मुख्य बिन्दु के रूप में उभरकर सामने आए हैं । समाज में सामाजिक – सरोकार को अनिवार्य मानते हुए अब्दुल बिस्मिल्लाह ने किसान , बुनकर , शिक्षा , पूंजीपति वर्ग आदि का समावेष अपनी रचनाओं में किया है , उनका मानना है कि इन

शाश्वत् मूल्यों के अभाव में मनुष्यत्व ही समाप्त हो जाएगा । इस सन्दर्भ में '' अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा साहित्य में सामाजिक सरोकार ' विषय से निम्नांकित तथ्य उभर के सामने आने की संभावना है । लेखक समाज की वर्तमान स्थिति के प्रति चिन्तित है । वह सामाजिक कुरीतियों , रूढ़ियों से समाज को मुक्त कर स्वस्थ समाज का दिशा निर्देश करना चाहता है ।

अब्दुल बिस्मिल्लाह के साहित्य के विवेचन के पश्चात् ही प्रस्तुत प्राक्कल्पना सिद्ध होगी ।

6) शोध कार्य की विधि

प्रस्तुत शोध कार्य में समस्यामूलक पद्धति का उपयोग किया जाएगा । शोध कार्य की प्रस्तावित योजनानुसार सामग्री का वर्गीकरण एवं विश्लेषण करते हुए निष्कर्ष स्थापित किये जाएगें ।

7) पूर्व कार्यों का मूल्यांकन

अब्दुल बिस्मिल्लाह के साहित्य को लेकर अब तक की प्राप्त जानकारी के अनुसार निम्नलिखित कार्य सामने आए है :–

i) श्री इन्नुस समसुद्दीन शेख — अब्दुल बिस्मिल्लाह का कथा साहित्य : विविध आयाम , शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर (महाराष्ट्र) 2004

यह शोध कार्य हिन्दू मुस्लिम समाज के साथ ही अन्य जाति , धर्म , निम्न वर्ग तथा उच्च वर्ग और पूंजीपतियों की शोषक प्रवृत्ति पर लिखा गया है ।

ii) शेख शरफोदीन फकोदीन : अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा – साहित्य में वर्तमान समस्याओं से जूझता आम आदमी , डॉ बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय , औरगाबाद , 2008

इस शोध कार्य के माध्यम से समाज को आम आदमी की सभी समस्याओं को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है ।

iii) शिवम् कुमार यादव : '' अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में बहुसांस्कृतिक विमर्श ' , लखनऊ विश्वविद्यालय , लखनऊ , 2019

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में अब्दुल बिस्मिल्लाह के साहित्यिक प्रदेय को निरूपित करते हुए अधुनातन लेखकों में उनके स्थान को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है । नर्यसामाजिक सम्बन्धों का प्रभाव समाज पर क्या असर दिखा रहा है इसकी चर्चा भी की गयी है ।

iv) रविन्द्र कुमार : '' अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा साहित्य का मनौवैज्ञानिक अध्ययन '' lovely professional University , Punjab , 2019

यह शोध कार्य मनोविज्ञान को आधार बना कर जो कहानियाँ और उपन्यास लिखे गए है उनके मनोवैज्ञानिक विन्दुओं पर चर्चा की

गई है । साथ ही साहित्य में से समाज के मनोवैज्ञानिक तत्वों पर चर्चा की गई है ।

v) श्रीमती शिल्पा बाले : कथाकार अब्दुल बिस्मिल्लाह की रचना दृष्टि , गोवा विश्वविद्यालय ,हिन्दी विभाग , 1999 ।

इस शोध कार्य में वर्ग विभेद , धार्मिक सहिष्णुता , क्रांति धर्मिता , पक्षधरता आदि बिन्दुओ को लेखक की विभिन्न रचनाओं द्वारा विश्लेषित कर उनकी रचना दृष्टि को जानने और समझने का प्रयास किया गया है ।

उपरोक्त शोध कार्यों को देखते हुए यह स्पष्ट हो जाता है कि अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा साहित्य में सामाजिक – सरोकार को लेकर अब तक कोई शोध कार्य प्रकाश में नहीं आया है । अतः '' अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा – साहित्य में सामाजिक सरोकार विषय की दृष्टि में मौलिक एवं प्रासंगिक है ।

8) शोध कार्य की प्रस्तावित योजना

शोध – कार्य के अध्ययन की रूपरेखा निम्नलिखित होगी जो अन्य सम्भावित रचनओं एवं सामग्री के आधार पर परिवर्तित हो सकती है :–

विषयानुक्रमणिका

भूमिका

पहला अध्याय   अब्दुल बिस्मिल्लाह का व्यक्तित्व एवं कृत्तित्व

1.1 व्यक्तित्व

1.2 कृत्तित्व

1.2.1 उपन्यास

1.2.2 कहानी संग्रह

1.2.3 नाटक

1.2.4 अन्य

1.3 पुरस्कार एवं सम्मान

1.4 विदेश यात्राएं

1.5 साहित्य का अनुवाद

1.6 साहित्य सृजन

दूसरा अध्याय   सामाजिक सरोकार अर्थ एवं स्वरूप

2.1 सामाजिक सरोकार का अर्थ

2.2 सामाजिक सरोकार का परिभाषाएं

2.3 सामाजिक सरोकार के अंग

2.4 सामाजिक सरोकार का महत्त्व

2.5 हिन्दी साहित्य में सामाजिक सरोकार

तीसरा अध्याय **सामाजिक सरोकार : पारिवारिक पक्ष / अब्दुल बिस्मिल्लाह का कथा साहित्य : पारिवारिक सरोकार**

3.1 परिवार

3.1.1 संयुक्त परिवार

3.1.2 संयुक्त परिवार विघटन

3.2 पारिवारिक संबंध

3.3 विवाह – व्यवस्था

3.4 नारी जीवन

3.5 अवैध यौन संबंध

3.6 जाति व्यवस्था

3.7 जाति पंचयात

3.8 शिक्षा व्यवस्था

चौथा अध्याय **सामाजिक सरोकार : आर्थिक पक्ष / अब्दुल बिस्मिल्लाह का कथा साहित्य – आर्थिक सरोकार**

4.1 वर्ग – व्यवस्था

4.2 आर्थिक शोषण

4.3 पिछड़ापन

4.4 आर्थिक विषमता / विकास

4.5 रिश्वतखोरी

4.6 भ्रष्टाचार

4.7 आर्थिक चेतना

पांचवां अध्याय **सामाजिक सरोकार : राजनीतिक पक्ष / अब्दुल बिस्मिल्लाह का कथा साहित्य : राजनीतिक सरोकार**

5.1 भ्रष्ट राजनीति

5.1.1 नेता

5.1.2 नेता और भ्रष्टाचार

5.1.3 चुनाव

5.2 राजनीतिक पतन

5.3 व्यवस्था

5.3.1 व्यवस्था

5.3.2 पुलिस

5.3.3 व्यवस्थागत विसंगतियां

5.4 राजनीतिक कुचक्रो में पिस्ता आम जन

छठा अध्याय **सामाजिक सरोकार : धार्मिक एवं सांस्कृति पक्ष / अब्दुल बिस्मिल्लाह का कथा साहित्य : धार्मिक एवं सांस्कृतिक सरोकार**

6.1 धार्मिक आस्था एवं अंधविश्वास

6.2 धार्मिक कर्मकांड

6.3 धर्मांधता

6.4 जातिगत भेदभाव

6.5 साम्प्रदायिकता

6.6 रहन सहन

6.7 रस्म – रिवाज

6.8 लोक – संस्कृति

6.10 सांस्कृतिक परिवर्तन

उपसंहार

परिशिष्ट

पुस्तक सूची

– आधार पुस्तक सूची

– सहायक पुस्तक सूची

पत्र – पत्रिकाएँ

क) आधार पुस्तक सूची

अ) अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यास

– समर शेष है , राजकमल प्रकाशन दरियागंज , नई दिल्ली संस्करण – 2016

– झीनी – झीनी बीनी चदरिया – राजकमल प्रकाशन , दरियांगत नई दिल्ली – संस्करण 2014

– जरहबाद – राजकमल प्रकाशन , दरियागंज , नई दिल्ली संस्करण – 2016

– दंतकथा – राजकमल प्रकााशन , दरियागंज , नई दिल्ली , संस्करण – 1990

– मुखड़ा क्या देखे – राजकमल प्रकाशन , दरियागंज , नई दिल्ली संस्करण – 1996

– अपवित्र आख्यान , राजकमल प्रकाशन , दरियागंज नई दिल्ली , संस्करण –2012

– रावी लिखता है – राजकमल प्रकाशन , दरियागंज नई दिल्ली संस्करण 2010

– कुठाँव – राजकमल प्रकााशन , दरियागंज , नई दिल्ली , संस्करण 2017

आ) अब्दुल बिस्मिल्लाह के कहानी संग्रह

– टूटा हुआ पंख – आलेख प्रकाशन , दिल्ली , प्रथम संस्करण – 1981

– कितने कितने सवाल पराग प्रकाशन , दिल्ली प्रथम संस्करण – 1984

– रैन बसेरा – वाणी प्रकाशन , नई दिल्ली , प्रथम संस्करण – 1986

– अतिथि देवो भव – राजकमल प्रकााशन , दिल्ली , प्रथम संस्करण –1990

– जीनिया के फूल – राजकमल प्रकाशन , दिल्ली , प्रथम संस्करण 2000

– रफ़ – रफ़ मेल – राजकमल प्रकाशन , दरियागंज , नई दिल्ली संस्कारण 2002

– शादी का जोकर – राजकमल प्रकाशन , दरियागंज , नइ दिल्ली , संस्करण

ख) सहायकत पुस्तक सूची

– सिंह , सुमन , हिन्दी साहित्यकारों के सामाजिक सरोकार , रोशन पब्लिकेशन , कानपुर , 2011

– मिश्र , अवधेशचन्द्र , प्रेमलता , सामाजिक मूल्यों का संकट , लक्ष्मी प्रकाशन , दिल्ली , 2009

– देवी , ज्ञानी , भीष्म साहनी के उपन्यासें में सामाजिक चेतना , नवभारत प्रकाशन दिल्ली 2010

– तिवारी , स्मिता , मन्नू , भंडारी के कथा साहित्य में सामाजिक चेतना , कें. कें पब्लिकेशन्स , दिल्ली , 2006

– नरेन्द्र शर्मा , ' कुसुम' साहित्य शिक्षा और सामाजिक सरोकार , श्रुति पब्लिकेशन्स प्रकाशक , जयपुर , प्रथम संस्करण 2010

– लालचंद राम , साहित्य और सरोकार , अकादमिक प्रतिभा प्रकाशन , नई दिल्ली , प्रथम संस्करण 2009

पत्र – पत्रिकाएँ

आलोचना

अनुसंधान

कथा देश

नया ज्ञानोदय